IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19650536

ISSN : 3048-6971

# भारतीय धर्म ग्रंथों में हिमालय के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का वर्णन

**डॉ. गौरीश नन्दिनी काला**
**हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग**
**हे. न. ब. गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय**
**श्रीनगर-गढ़वाल 246174**

प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में हिमालय को आध्यात्मिक चेतना, धर्म, दर्शन, ज्ञान, साधना और मुक्ति की अनवरत साधना का प्रतीक माना गया है। इसकी नीरव कंदराओं में अनेक ग्रंथों की रचना हुई और अनेक योगियों, तपस्वियों, महापुरुष और दार्शनिकों ने अपने आत्मानुभव का प्रकाश यहीं से प्राप्त किया। हिमालय भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और प्रकृति का प्रतीक है। पौराणिक ग्रंथों में इसे "देवतात्मा" और "नगाधिराज" कहा गया है। पुराणों में हिमालय को देवताओं की क्रीड़ा स्थली तथा दिव्य शक्तियों का निवास–स्थान माना गया है। हिमालय से प्रवाहित होने वाली जीवनदायिनी नदियाँ गंगा, यमुना, अलकनन्दा, मंदाकिनी भारतीय सभ्यता को उर्वरता, समृद्धि और सांस्कृतिक चेतना प्रदान करती हैं। हिमालय जल धाराओं का उद्गम–स्थल, खनिज–संपदा, वन–संपदा और जैव–विविधता का विशाल भंडार भी है, जो समूची वसुंधरा के लिए अमूल्य धरोहर है।

भारतवर्ष को श्रेष्ठतम बनाने में हिमालय का अतुल्य योगदान है जो भारत के मस्तक पर एक शुभ्र मुकुट के रूप में सुशोभित है। कवियों की कल्पना के अनुसार यह हिमालय पृथ्वी के मानदंड के रूप में स्थित है, यही कारण है कि **कालिदास** जैसे महान कवियों ने इस दिव्य पर्वत की गाथा गायी है। कुमारसंभव नामक काव्य का प्रारम्भ ही हिमालय के गान से हुआ है। यह हिमालय देवात्मा है, हमारा हिमालय, हमारी गंगा, हमारे तीर्थ, हमारे देवालय आदि हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो हमें शान्ति और सद्भाव का सन्देश प्रदान करते हैं। हिमालय और गंगा के बिना भारतवर्ष को परिभाषित नहीं किया जा सकता। यहीं वे दो तत्व हैं जिनके कारण सम्पूर्ण विश्व में भारतवर्ष एक अलग आभा से आलोकित जान पड़ता है। पुराणों में, वेदों में इस हिमालय की चर्चा और वर्णन भारत की सांस्कृतिक अस्मिता का बोध कराते हैं। हिमालय की संस्कृति एक रहस्यमयी संस्कृ ति है, जिसने प्रकृति के बीच मनुष्य को विकास यात्रा की राह दिखाई है।

**बीज शब्द** – हिमालय, संस्कृति, गंगा, प्राचीन, मनीषियों, श्रेष्ठतम, अतुल्य, कल्पना, दिव्य, पर्वत, सद्भाव, आलोकित, सांस्कृतिक, अस्मिता, प्रकृति, रुपहली, धार्मिक, ग्रन्थों, ऋषि, ।

## प्रस्तावना –

हिमालय आदिकाल से ही साधकों, चिंतकों और योगियों की तपोभूमि और प्रेरणाभूमि रहा है। इसकी गोद में अनगिनत तपस्वियों, ज्ञानियों और दार्शनिकों ने आत्मानुभूति का प्रकाश पाया और असंख्य महापुरुषों ने इसे अपनी साधना और कर्मक्षेत्र बनाकर ज्ञान की धारा प्रवाहित की। इसकी निस्तब्धता में अनेक ग्रंथ मानवता को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार हिमालय भौगोलिक स्वरूप ही नहीं, बल्कि ज्ञान, तप, साधना और मुक्ति की साधना का भी प्रतीक है। भारतवर्ष की उत्तरी सीमाओं को बनाने वाला और इसका प्रहरी हिमालय इतिहास के प्रारम्भ से ही इस देश के लिए धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। वैदिक साहित्य वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, रामायण, महाभारत प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में ऋषि–मुनियों ने हिमालय की महिमा का गान किया है।

## (क) ऋग्वेद में हिमालय –

वेदों की भूमि होने से प्राचीन मनीषियों का ध्यान हिमालय की ओर जाना स्वाभाविक ही था। हिमालय के अन्दर अति सुन्दर उपत्यकायें मिलती हैं जिन्हें देखकर प्राचीन ऋषि आकृष्ट हुए और उन्होंने अपने स्वरों से इसके सौन्दर्य का गान किया। **"ऋग्वेद में हिमालय शब्द नहीं अपितु इसी का दूसरा नाम हिमवन्त कई बार आया है। जिसे भाष्यकार सायण ने सोम का विशेषण प्रदान किया है।"**[1] कुछ लोग कैलास पर्वत को मंजुवत पर्वत कहते हैं। वेदों में हिमालय की देवता रूप में प्रतिष्ठा की गई है। या फिर प्राकृतिक अलंकरण के रूप में उसके सौन्दर्य को उभारा गया है और **"इसके पर्वतों को युग–युग तक खड़े योगक्षेम वहन करने वाले पूर्वज कहा गया है।"**[2] ऋग्वेद में शीत जलवायु का उल्लेख हिमालय के अतिरिक्त कहीं नहीं मिलता है। इसके अभिनव कल्प में हिमालय की उत्पति हुई। सप्तसैन्धव प्रदेश की धरातलीय संरचना में हिमालय जैसे विशाल पर्वत का उल्लेख है और प्रवाह प्रणाली में सिन्धु, सरस्वती, आदि प्रमुख नदियां और मानवीय क्रियाकलापों में यदु, पुरु, जैसे आर्य, दस्यु, पणि, यक्ष आदि का उल्लेख मिलता है।

**"यस्येमें हिमवन्तो महित्त्वा**

**यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।"**[3]

ऋग्वेद में हिरण्यगर्भ प्रजापत्य ऋषि द्वारा हिमवन्त जैसे विशाल पर्वत के साथ रस सहित समुद्र का उल्लेख मिलता है। मनु के अनुसार आर्यों का निवास क्षेत्र हिमालय से लेकर विन्ध्याचल तक विस्तृत बताया गया है।

**"हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये यत्प्राग्विनशनादपि**

**प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः।"**[4]

**"ऋग्वेद में कहा है कि सप्तसैन्धव की उत्तरी सीमा पर हिमवन्त पर्वतमाला के अतिरिक्त एक विशाल समुद्र था जो मध्य एशिया के विस्तृत भू भाग में फैला था।"**[5] उत्तर में हिमालय एवं कश्मीर तक सप्तसैन्धव प्रदेश का विस्तार था।

**"यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्र रत्तया सहाहुः।**

**यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्य देवाय हविषा विधेम।।"** [6]

ऋग्वेद में हिमालयी, वन, वृक्ष, लतादि का बड़ा वर्णन मिलता है। मानव द्वारा उपयोगी फूल–फल युक्त वृक्ष अनेक स्थान पर उल्लेख किया गया है–

**"यो भोजनं च दयसे च वर्धमार्द्रादा**

**शुष्कं मधुमद् दुहोहिथ**

**यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च।।"**[7]

हिमालयी वृक्ष ऋग्वेद में जिसका वर्णन है वह मुख्य है जैसे खदिर का वृक्ष, शिंशपा, शमी, किंशुक, शाल्मली (सेमर) और सोमलता का। देवताओं के राजा इन्द्र को सोम प्रेमी कहा गया है। इसके पीने से देवाताओं को अमरत्व की प्राप्ति होती थी। **"ऋग्वेद में प्रसंग है कि ये हिमवन्त पर्वत जिसकी महिमा गाते हैं। जिसके महत्व की घोषणा पृथ्वी सहित समुद्र कर रहा है और जिसके सामर्थ्य की अभिव्यक्ति ये दिशायें कर रही हैं उस देव की हम हविष्य से आराधना करते हैं।"**[8]

### (ख) अथर्ववेद –

हिमालय के संदर्भ में अथर्ववेद में कहा गया है –

**"हिमवन्तः प्रस्त्वन्ति सिन्धौ समह संगमः।**

**आपोह मह्यं तद् दैवीर्ददून ह्द्द्योत भेषजम्।।"**[9]

अर्थात हिमालय से निकलने तथा समुद्र में मिलने वाली सरितायें हमें दिव्य औषधियां प्रदान करें। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद, ज्ञान, कर्म और उपासना का सफलता पूर्वक आधार रहा है। परन्तु इन सब की सिद्धि ज्ञान विज्ञान द्वारा अथर्ववेद की ऋचाओं में मिलती है। अथर्ववेद ज्ञान–विज्ञान का भण्डार है। अथर्ववेद में हिमालय को आयुर्वेद का उत्कर्ष माना है। अथर्ववेद में वर्णन आया है कि हे पृथ्वी तेरे ये पर्वत, तेरे ये अंचल और तेरे हिमवंत हमारे लिए सुखकर हो।

**"गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यसे**

**पृथिवी स्थोनमस्तु।।"**[10]

### (ग) उपनिषद –

हमारे उपनिषद् ग्रन्थों में ऋषि–मुनियों ने इसकी ही छाया में बैठकर परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त किया है। इसी हिमालय ने अपनी गोद में ऐसे–ऐसे ब्रह्मा तत्त्वों को आश्रय दिया है जो इस जन्म–मृत्यु से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर गये हैं। हिमालय ने भौतिक जगत् से अध्यात्म जगत को प्रेरित किया है। वेदों के ज्ञान का नाम ही उपनिषद् है उपनिषदों का मुख्य उद्देश्य आत्मा के यथार्थ का बोध कराना है। उपनिषदों को साक्षात् कामधेनु माना गया है।

### (घ) केनोपनिषद् –

यह उपनिषद् सामवेद से लिया गया है। इसमें हिमालय में गन्धर्व, किन्नर, यक्षों का वर्णन है। संस्कृत साहित्य में अनेक स्थानों पर इसका पता चलता है कि यक्ष हिमालयी हैं।

**"स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियाजगाय बहुशोभमानानुमा**

**हैमवर्ती ता होवाच किमेतद् यक्षमिति।।"**[11]

यहां पता चलता है कि यक्षरूपी परब्रह्मा परमात्मा का और सभी देवाताओं का साक्षात् इस हिमालय पर हुआ होगा। उमा कुमारी हिमालय के आंगन में विचरण करती है। इस उपनिषद् में जिस स्त्रीवेशधारिणी, उमारूपा विद्यादेवी का वर्णन है उसे हैमवन्ति कहा गया है और यह हैमवन्ति हिमवान् की कन्या है जो लोक में उमा के नाम से विख्यात है। जिसका विवाह शंकर भगवान् से हुआ। अतः हिमालय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है कि रूद्र पत्नी हिमालय पुत्री पार्वती जो विद्यास्वरूपिणी है उनको प्राप्त कर शंकर भगवान् जगदीश बन गये इस दृष्टि से हिमालय का अत्यन्त महत्व है।

**(ङ) कठोपनिषद् –**

इसमें ऋषियों ने हिमालय के समान पर्वत के बारे में बताया है। इस पर्वत को हम हिमालय का ही एक रूप मान लेते हैं। यहां यमराज ने नचिकेता को शिक्षा दी है कि–

**"यथोदकं दुर्गे दृष्टं पर्वतेषु विद्यावति ।**
**एवं धर्मान् पृथक पश्यंस्तावानुविधावति।।"**[12]

वर्षा की एक बूंद किसी एक ऊँचे पर्वत पर पड़ती है तो टूट–टूट कर बिखर जाती है। पर्वत के चारों तरफ फैल जाती है। उसी प्रकार एक ही परमात्मा से उत्पन्न देव, असुर मनुष्यादि को जो परमात्मा से भिन्न मानकर उसकी उपासना पूजा करता है अनेक प्रकार की योनियों में जन्म लेकर इस बूंद के समान टूट जाना होता है। लेकिन हिमालय एक दृढ़ शक्ति है। जो भी उसके सम्मुख टकरायेगा टूट कर बिखर जाता है। इसमें अनेकों नदियां, औषधियां, वन्य सम्पदा, खनिज सम्पदा समायी हुई है।

**(च) मुण्डकोपनिषद् –**

औषधियों के उत्पन्न होने का स्थान हिमालय को कहा गया है। इस विशाल पर्वत की उत्पत्ति भगवान् से हुई है और इसमें जो नदियां बह रही हैं वे भी परमात्मा की उत्पत्ति है और इसमें औषधियों का उत्पादन भी परमेश्वर ने किया है। कहने का तात्पर्य है कि **"पर्वत हिमालय जैसी महान् शक्ति भी स्वयं ईश्वर से ही प्रादुर्भाव हुई है अर्थात् इन सब का उत्पत्ति केन्द्र ब्रह्म ही है।"**[13] हिमालय ने अपने अनुरूप पर्वतों के द्वारा स्पष्ट किया है स्वयं पर्वत भी उस शक्ति स्वरूप ईश्वर के सामने नतमस्तक हैं जो स्वयं सृष्टि का रचयिता है।

**(छ) वृहदारण्यक उपनिषद् –**

वृहदारण्यक उपनिषद् में वर्णन आता है कि **"केदारनाथ में एक जलकुण्ड है जिसमें निर्विष सांप रहता है। इस जल कुण्ड के पास एक मन्दिर है उसमें एक धूनी जलती है और उसकी अग्नि को साक्षी कर शिव और पार्वती ने विवाह किया था। पार्वती का मायका अर्थात् हिमालय का निवास यही बताया जाता है। पार्वती हिमालय राज की पुत्री थी।"**[14] **"इसी हिमालय पर वनस्पतियों और वृक्षों से युक्त सुन्दर वन है। इन वनों में नाना प्रकार के वृक्ष हैं। इसी उपनषिद् में आम, पीपल, गूलर के वृक्षों का भी वर्णन आया है ये। सब हिमालय में पाये जाते हैं।"**[15]

**(ज) श्वेताश्वतरोपनिषद् –**

"श्वेताश्वतर उपनिषद् में भी कहा गया है कि संसार को सुख पहुंचाने वाले परमेश्वर उस पर्वत अर्थात् हिमालय पर निवास करते है और उस हिमालय की रक्षा करते हैं।"[16]

**निष्कर्ष –**

हिमालय वसुंधरा का अनुपम स्थल है। गंगा और यमुना जैसी पवित्र जीवनदायिनी नदियाँ भारत को पवित्र और समृद्ध करती हैं। इसकी गोद में बहती सदानीरा निर्झरिणियाँ, कन्दराओं में प्रतिध्वनित मंत्रोच्चार, और हिमशिखरों पर बिखरी स्वर्णिम आभा मिलकर इसे प्राकृतिक सौंदर्य के साथ अध्यात्म, ज्ञान और मुक्ति का पावन क्षेत्र बना देते हैं।यह पवित्र भूमि नर नारायण, महादेव, नारद, कुबेर और उद्धव की तपस्थली रही है यही कारण है की आदिगुरु शंकराचार्य भी इस हिमालय की पवित्र भूमि के प्रति आकर्षित होकर बद्री और केदार जैसे पवित्र धार्मिक स्थलों का पुनरोद्धार किया ।

वेद, पुराण, उपनिषद भारतीय संस्कृति के आदि ग्रन्थ हैं। जिनमें जीवन के रहस्य और जीवन को समुन्नत बनाने का दर्शन समाया हुआ है। जिन पूर्वजों से हमें धर्म, दर्शन, साहित्य, नीति आदि के रूप में महत्वपूर्ण भाग प्राप्त हुआ है उसके प्राकृतिक परिवेश के भी हम उत्तराधिकारी है। उनके पर्वत, वन, मरू, समुद्र, ऋतुएं आदि प्राकृतिक नियम से कुछ परिवर्तित अवश्य हो गए है परन्तु तत्वतः उनकी स्थिति पूर्ववत् है और उनसे हमारे रागात्मक सम्बन्ध संस्कारजन्य ही नहीं स्वार्जित भी रहते हैं। भारतीय पुराणग्रन्थ वेद व्यास द्वारा रचे गये हैं। जिसमें जीवन की मीमांसा का गहन विश्लेषण है। हिमालय भारतीय संस्कृति का जीवन्त अंग है जो अपने प्रतीक में भारतीय संस्कृति को अनेक अर्थ प्रदान करता है। इसलिए अन्य धर्म ग्रन्थों की भांति पुराणों में भी हिमालय का वर्णन किसी न किसी रूप में आया है।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची –


1. ऋग्वेद – 10/12/14
2. ऋग्वेद – 10/34/14
3. ऋग्वेद – 10/12/14
4. मनुस्मृति – 2/19
5. ऋग्वेद – 9/113/14
6. ऋग्वेद – पृष्ठ सं0 10/121/04
7. ऋग्वेद – 2/13/17
8, ऋग्वेद – 10/94/11
9. सिंह, कर्ण, वैदिक साहित्य का इतिहास – पृ0 सं0–50
10. अथर्ववेद – 12/1/11
11. केनोपनिषद खण्ड – 4/12
12. कठोपनिषद – 1/14
13. मुण्डोकोपनिषद सम्प्रसूता खण्ड – 1/5
14. वृहदाण्यक उपनिषद – 6/1/3
15. वृहदाण्यक उपनिषद – 4/3/36
16. श्वेताश्वर अध्याय – 3/6